–तुलना

क्यों कहां भेज दिया चपरासी को ?

अपने घर के काम से नहीं भेजा हूं । दफतर के काम से गया है,दफतर का काम निपटाकर सोहन अस्पताल में भर्ती अपने पिता को देखकर आएगा । घण्टा भर भी तो नही हुआ गये । चपरासी को अपना ही काम करना है तो उसको रखने की क्या जरूरत ।

क्यों हृदयहीन हो रहे हो बिपिन ?

तुमको लग रहा हूं मैं हृदयहीन हो रहा हूं । क्या गलत है पानी कौन पिलायेगा ?

सभ्यता से बात करना सीखो बिपिन,सड़क पर नही दफतर में हो । सोहन दैनिक वेतन भोगी है, इसके बाद भी तुमसे कई गुना अधिक काम करता है । तुम क्या करते हो चार घण्टे के लिये दफतर आते हो । आते ही लोटपोट करने लगते हो ।पानी की बातलें हर टेबल पर रखकर गया है पी लो प्यास लगी है तो !

क्या .....! खुद पानी लेकर पीना है तो चपरासी की क्या जरूरत ?

गाड़ी बन्द हुए सालो बीत गये हैं फिर तुम ड्राइवर की क्या जरूरत है । चालीस हजार रूपये हर महीने ले जा रहे हो वह भी बिना काम के । बेचारा सोहन तो दफतर के अन्दर–बाहर के काम आवक–जावक सहित, दूसरे भी काम कर लेता है । अब दैनिक वेतनभोगी चपरासी से क्या काम लेना चाहते हो । अपने दिल से पूछो तुम क्या कर रहे हो ?

बिपिन–मैं परमानेन्ट सरकारी दमाद वह दैनिक वेतनभोगी चपरासी हमारी उसकी क्या तुलना ? नन्दलाल भारती 02.03.2011